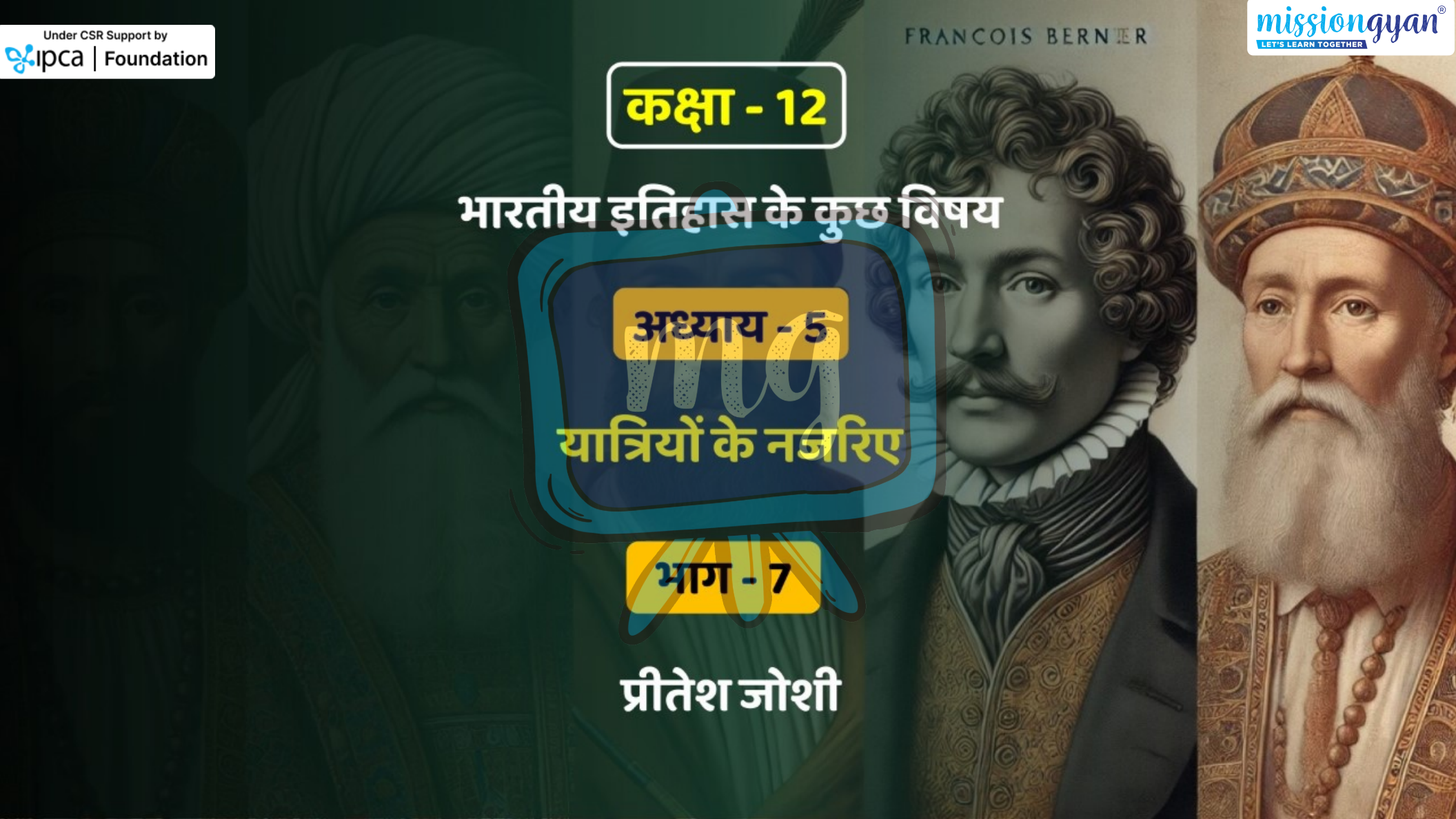
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 5

यात्रियों के नजरिए

भाग - 7

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- शिल्पकार
- व्यापार
- नगर

एक अधिक जटिल सामाजिक सच्चाई :-

- बर्नियर के वर्णन में मुगल राज्य को निरंकुश दिखाने का प्रयास किया है।
- उनका विवरण जटिल सामाजिक सच्चाई की ओर इशारा करता है, जैसे –

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



शिल्पकारों के बारे में वर्णन किया कि :-

- उनके पास अपने उत्पादों को अच्छा बनाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं था।
- क्योंकि राज्य लाभ/मुनाफे का अधिग्रहण कर लेता था इसलिए शिल्पकारों से सम्बन्धित उत्पादन पतनोन्मुख था।
- साथ ही वह यह भी मानता है कि पूरे विश्व से बड़ी मात्रा में बहुमूल्य धातुएँ भारत में आती थी क्योंकि उत्पादों का सोने-चाँदी के बदले निर्यात होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

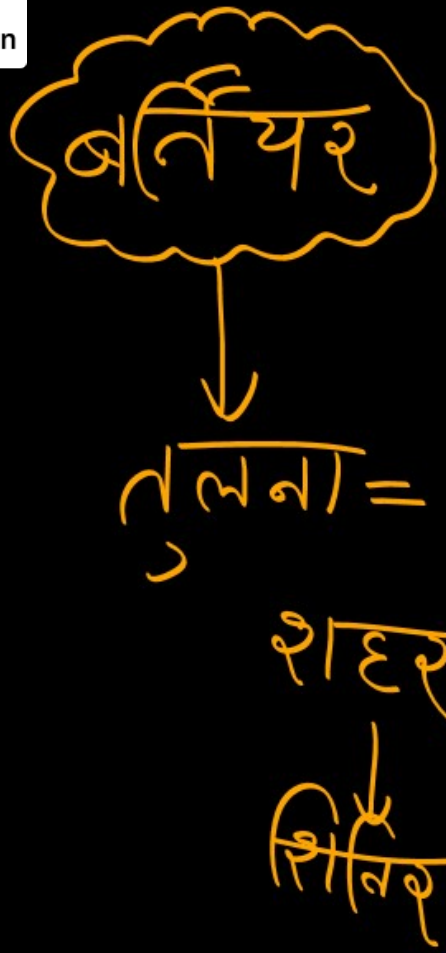


व्यापार सम्बन्धित वर्णन में कहा है कि -

- व्यापारिक गतिविधियां सुदूर प्रदेशों तक फैली हुई थी।
- पूरे विश्व से बहुमूल्य धातुएं भारत आती थी।
- उत्पादों का निर्यात सोने-चांदी के बदले होता था।
- व्यापारिक समुदाय समृद्ध था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

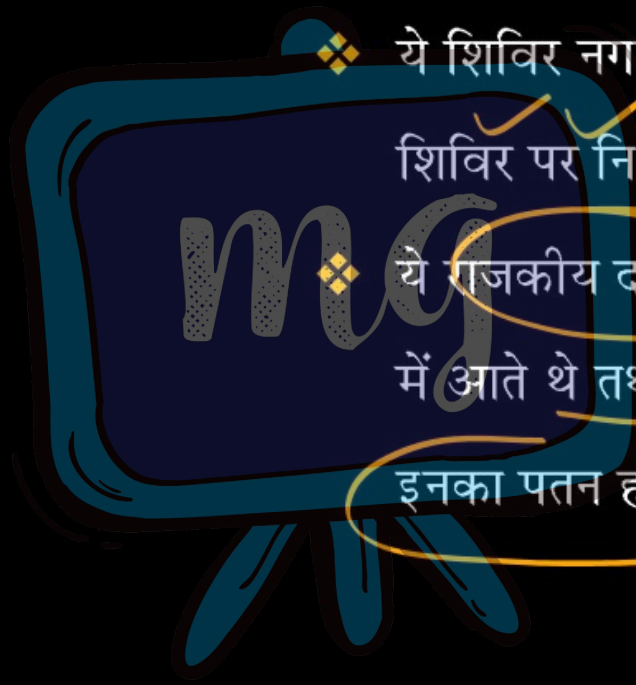


नगरों का वर्णन-

- 17वीं शताब्दी में कुल जनसंख्या की लगभग 15 प्रतिशत आबादी नगरों में रहती थी।
- यह अनुपात पश्चिमी यूरोप के नगरीय जनसंख्या के अनुपात से अधिक था।
- फिर भी बर्नियर मुगलकालीन शहरों को "शिविर-नगर" कहता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

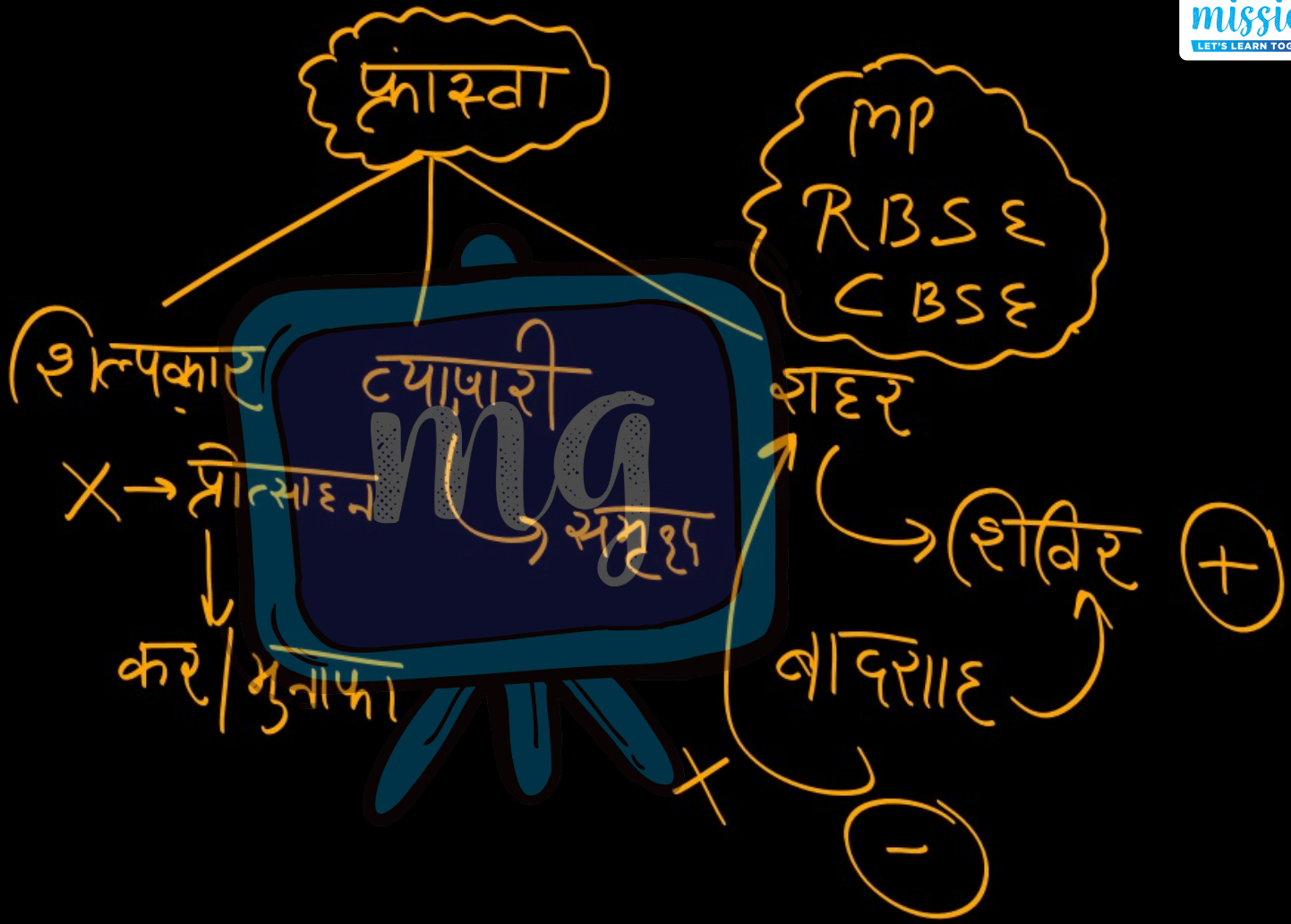
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- ये शिविर नगर अपने अस्तित्व के लिए राजकीय शिविर पर निर्भर रहते थे।
- ये राजकीय दरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते थे तथा उनके चले जाने के बाद तेजी से इनका पतन हो जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

९. फ्रांस्वा बः ने भारतीय शब्दों को शिविर नगर क्यों कहा ?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

// दासी

महिलाऐं : दासियां, सती तथा श्रमिक :-

- अधिकतर यात्री जिन्होंने यात्रा वृत्तान्त लिखे पुरूष थे।
- जिन्हे महिलाओं की स्थिति का विषय रुचिकर व जिज्ञासा पूर्ण लगता था।
- कभी-कभी वे सामाजिक पक्षपात को सामान्य मान लेते थे, जैसे -
- बाजारों में दास/ दासियाँ किसी भी अन्य वस्तु की तरह खुले आम बेचे जाते थे और नियमित रूप से भेंट स्वरूप भी दिए जाते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

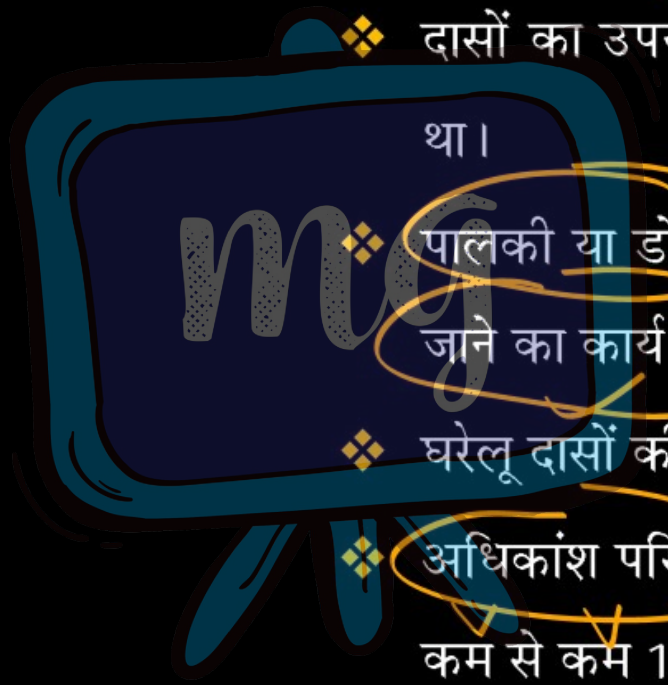
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इब्न बतूता ने भी सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक को भेंट देने हेतु घोड़े व दास खरीदे थे।
- इब्न बतूता के अनुसार दासों में काफी विभेद हुआ करता था।
- सुल्तान की सेवा में कार्यरत कुछ दासियां संगीत व गायन में कुशल/दक्ष हुआ करती थी।
- अमीरों पर नजर रखने हेतु सुल्तान दासियों को नियुक्त करता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

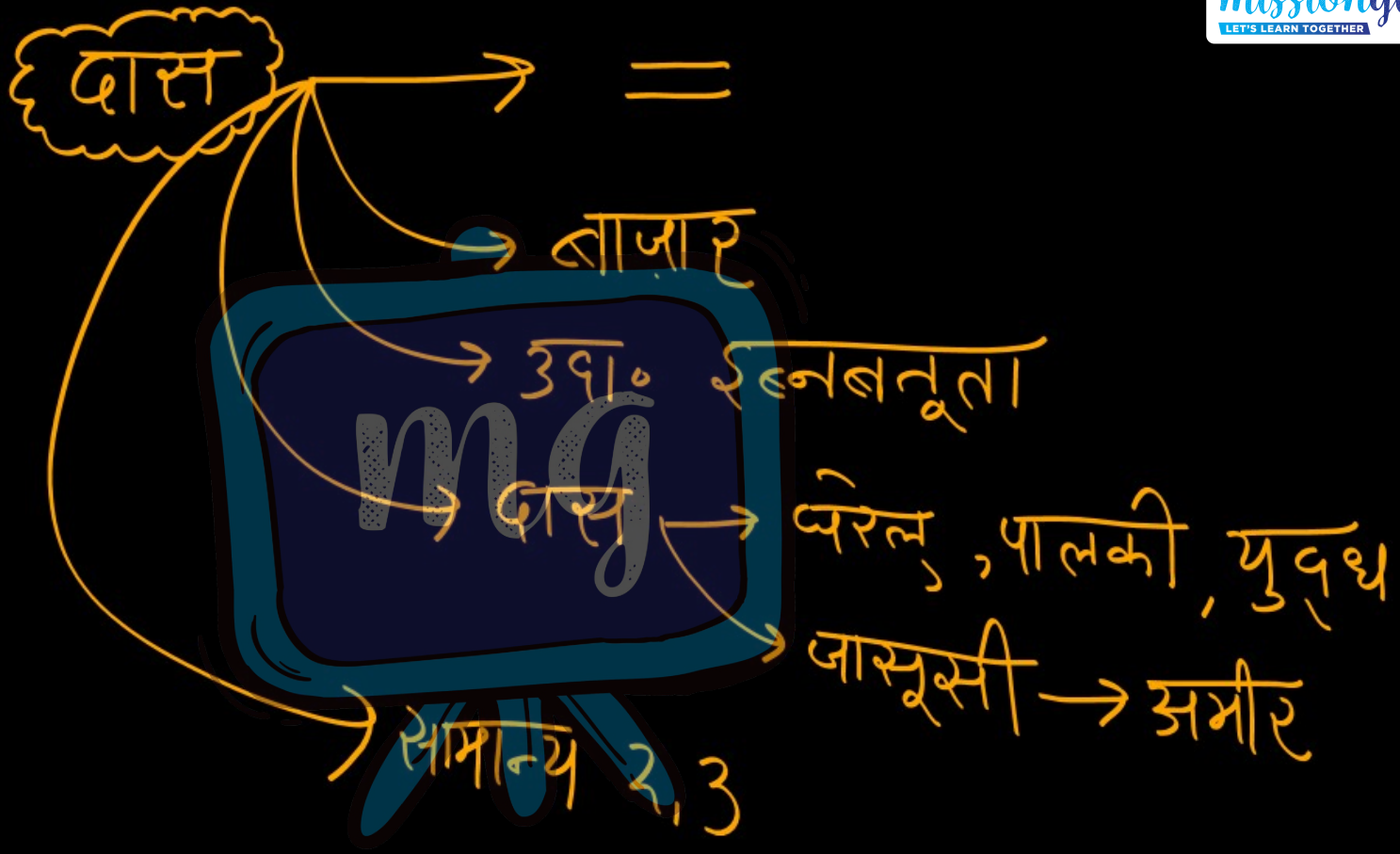
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- दासों का उपयोग घरेलू श्रम में भी किया जाता था।
- पालकी या डोले में महिलाओं व पुरूषों को ले जाने का कार्य दास करते थे।
- घरेलू दासों की कीमत बहुत कम होती थी।
- अधिकांश परिवार दास रखने में समर्थ होते थे। कम से कम 1-2 दास रखते थे।

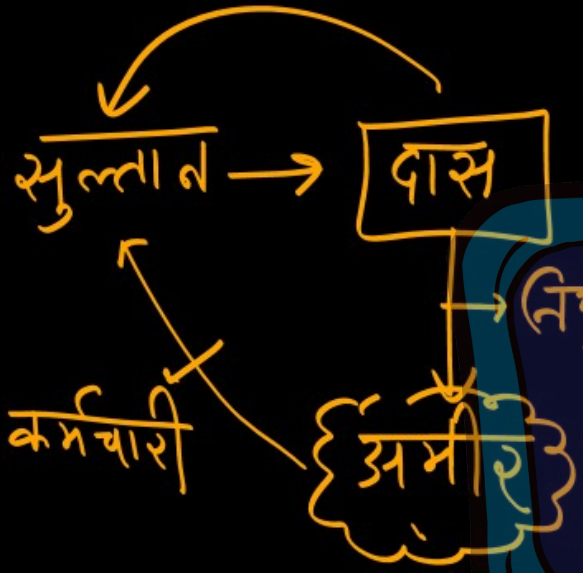
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



दासियाँ :-

इब्न बतूता अपने वर्णन में बताते है कि :-

- सम्राट हर छोटे या बड़े अमीर के साथ अपने एक दास को रखता था जो सम्राट के लिए जासूसी का कार्य करते थे।
- वह महिला सफाई कर्मचारियों को भी नियुक्त करता था जो बिना बताये घर में घुस जाती थी। वे दासियों से सूचनाऐं प्राप्त कर लेती थी।
- दासियों को लूट, हमलों व अभियानों के दौरान बलपूर्वक प्राप्त किया जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मध्यकालीन भारत की दास प्रथा का वर्णन करे



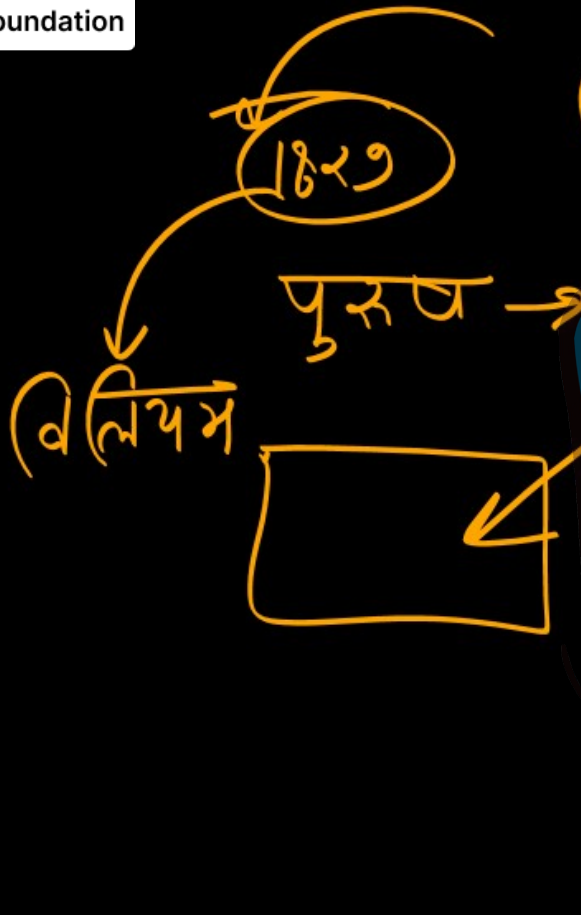
mg

या

Q. इब्नबतूता ने दासियो और दास के संदर्भ मे अपने वृतान्त मे क्या लिखा है?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



बर्नियर तथा सती प्रथा :-

- सती प्रथा के वर्णन को बर्नियर ने मुख्य रूप से चुना।
- सती प्रथा में कुछ महिलाऐं प्रसन्नता से मृत्यु को चुन लेती थीं तथा अन्य को सती होने के लिए बाध्य किया जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



सती बालिका :-

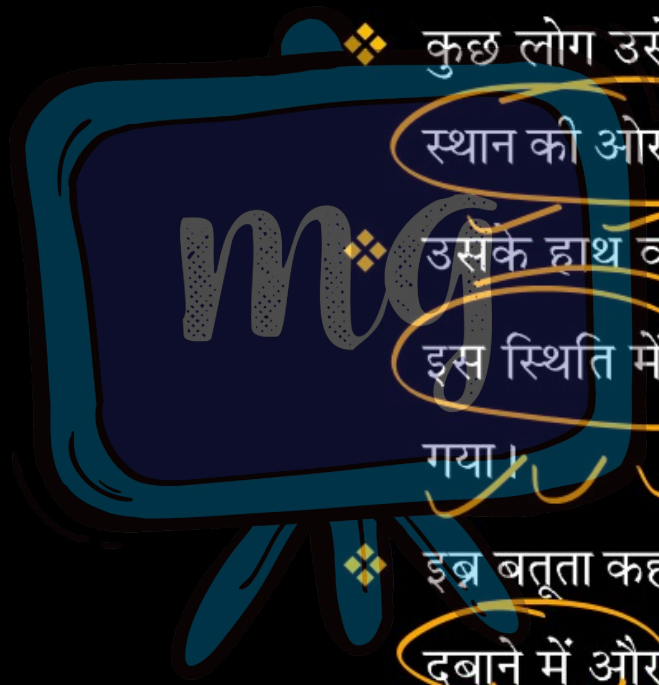
बर्नियर के वृत्तान्तों में लाहौर की घटना का वर्णन सबसे मार्मिक है। उसके अनुसार :-

- बर्नियर ने लाहौर में 12 वर्ष की एक सुन्दर अल्प व्यस्क विधवा को सती होते देखा।
- उस भयानक नर्क की ओर जाते समय व असहाय बच्ची जीवित से अधिक मृत प्रतीत हो रही थी।

वह काँपते हुए बुरी तरह रो रही थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- कुछ लोग उसे जबरदस्ती पकड़ कर उस घातक स्थान की ओर ले जाकर लकड़ियों पर बैठा देते है।
- उसके हाथ व पैर बांध दिये ताकि भाग न पाये।
- इस स्थिति में उस मासूम को जिन्दा जला दिया गया।
- इब्न बतूता कहता है कि ''मैं अपनी भावनाओं को दबाने में और उनके कोलाहलपूर्ण तथा व्यर्थ के क्रोध से बाहर आने से रोकने में असमर्थ था।''

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

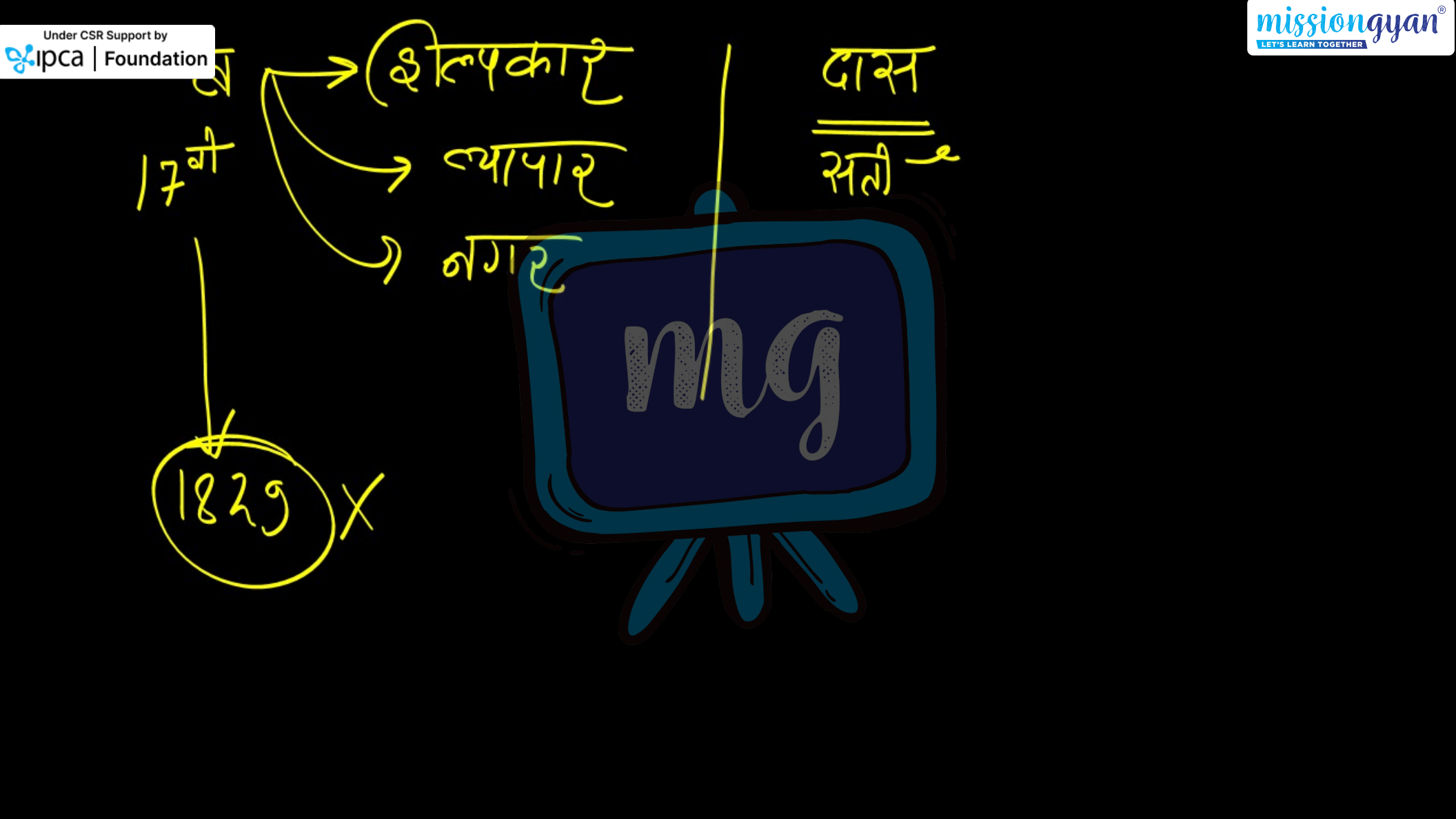
Q. बार्नियर के अनुसार किस प्रथा को देखकर वह स्तब्ध रह गया था?



Q .... सती प्रथा का वर्णन करे?

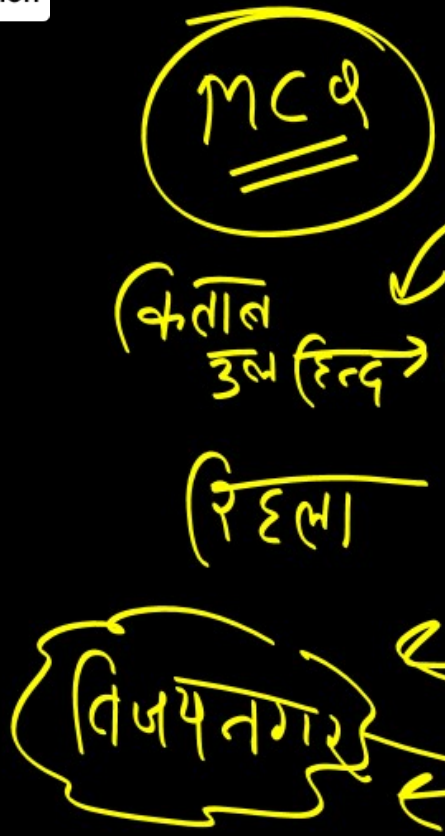
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



काल रेखा (कुछ यात्री जिन्होंने वृत्तान्त छोड़)	
दसवीं–ग्यारहवीं शताब्दियाँ	
973–1048	मोहम्मद इब्न अहमद अबू रेहान अल बिरूनी (उजबेकिस्तान से)
तेरहवीं शताब्दी	
1254–1323	मार्को पोलो (इटली से)
चौदहवीं शताब्दी	
1304–77	इब्न बतूता (मोरक्को से)
पंद्रहवीं शताब्दी	
1413–82	अब्द अल–रज्जाक कमाल अल–दिन इब्न इस्हाक अल–समरकंदी (समरकंद से)
1466–72 (भारत में बिताए वर्ष)	अफानासी निकितिच निकितन (पंद्रहवीं शताब्दी, रूस से)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

काल रेखा (कुछ यात्री जिन्होंने वृत्तान्त छोड़े)	
सोलहवीं शताब्दी	
1518 (भारत की यात्रा)	दूरते बारबोसा, मृत्यु 1521 (पुर्तगाल से)
1562 (मृत्यु का वर्ष)	सयदी अली रेइस (तुर्की से)
1536–1600	अंतीनियो मानसेरेते (स्पेन से)
सत्रहवीं शताब्दी	
1626–31 (भारत में बिताए वर्ष)	महमूद वली बलखी(बल्ख से)
1600–67	पीटर मुंडी (इंग्लैंड से)
1605–89	ज्यौं बैप्टिस्ट तैवर्नियर (फ्रांस से)
1620–88	फ्रांस्वा बर्नीयर (फ्रांस से)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कैसे

प्रश्न 1. "किताब-उल-हिन्द" पर लेख लिखिए।

लेखन

8 प्रश्न

त्योहार
तुलना

अलबरूनी → किसने
अरबी → किससे
40 → कितनी

क्यों

रंगोली → भौगोलिक, धर्म, समाज से, खानपान, रीति, त्योहार

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : ''किताब-उल-हिन्द'' अल-बिरूनी द्वारा अरबी भाषा में लिखित ग्रन्थ हैं। अल-बिरूनी ने इसमें भारत के धर्म, दर्शन, त्यौहार, खगोल विज्ञान, कीमिया, रीति-रिवाज व प्रथाएं भार-तौल, भारतीयों का सामाजिक जीवन, मापन-तंत्र, विज्ञान, मूर्तिकला तथा कानून का विशद् वर्णन किया है।

80 अध्यायों में विभाजित इस ग्रन्थ में एक विशिष्ट लेखन शैली देखने को मिलती है जिसमें लगभग सभी अध्यायों का प्रारम्भ एक प्रश्न से होता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उसके बाद उसका संस्कृतवादी परम्पराओं से वर्णन तथा अंत में अन्य संस्कृतियों से उसकी तुलना। अनेक इतिहासकार इसे ज्यामिति रचना कहते हैं क्योंकि अल-बिरूनी का झुकाव गणित की ओर था।

अल-बिरूनी अनेक भाषाओं से परिचित थे तथा उस समय संस्कृत, पालि एवं प्राकृत भाषाओं में होने वाले अनुवाद की जानकारी उन्हें थी। इस पुस्तक में अनेक प्राचीन दन्तकथाओं के साथ-साथ खगोल विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान से संबंधी जानकारी प्राप्त होती है। यदि संक्षेप में हम कहें तो मध्यकालीन भारतीय इतिहास के विषय में जानकारी का यह एक महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।